धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

जनवरी - 2012

परम पू० भगवान देवात्मा का

161 वाँ शुभ जन्म महोत्सव

पृष्ट 20 का बाकी

* हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि परम शक्तिशाली सम्राज्य भी अन्याय, क्रूरता वा अनौचित्य की नीति पर चलने से धाराशायी हो जाते हैं। क्या दिल्ली की सुल्तानशाही छिन्न भिन्न नहीं हो गई थी। क्या मुगल सम्राज ध्वंस नहीं हो गया था? क्या बृतानवी सम्राज्य नष्ट नहीं हुआ?

* जैसे अयोग्य व्यक्ति अपनी अयोग्यताओं को समझे बिना षड़यन्त्रों की सहयाता से सत्ता के पदों पर पहुंच जाते हैं, वैसे ही कुछ व्यक्ति मर्यादाओं की हत्या करके सत्ता को हथिया लेते हैं।

* यद्यपि इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है कि कैसे बड़े बड़े कार्य अयोग्य हाथों में आ जाने से नष्ट हो गए हैं फिर भी प्रत्येक महान कार्य इसी इतिहास को दोहराता है क्योंकि अंहकारी और अयोग्य आदमी सत्ता को हथिया लेते हैं और उस महान कार्य का बेड़ा ग़र्क करके ही छोड़ते हैं, जिसका वह प्यार करने का दावा करते हैं। वह स्वंय भी उस महान कार्य के साथ साथ डूब जाते हैं। पर उन व्यक्तियों का डूबना शोकप्रद नहीं होता, महान कार्य के नाश का शोक होता है।

* समान्य व्यक्ति की मानसिकता ऐसी ही होती है। इससे अयोग्य व्यक्ति बड़े बड़े पदों को हथियाने के अकांक्षी हो उठते हैं और इस प्रकार इस प्रक्रिया में उसी कार्य का नाश कर बैठते हैं, जिसके विकास के वे इच्छुक होते हैं।

* जो भी संस्थाएं असहनशीलता, क्रूरता और अमानवियता के तत्वों का नंगा नाच करने की आज्ञा देंगी, वह उसी प्रकार नष्टभृष्ट हो जाएंगी जिस प्रकार कि मुगल सम्राज्य हुआ।

* अपने अदर्शों की गरिमा समझने वाले समस्त जनों को न्याय, अहिंसा वा सात्विकता के मार्ग पर चलना होगा। प्रकृति में केवल न्याय वा सात्विकता के तत्व की सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं। अन्याय तथा क्रूरता तो अपने धारकों को नेस्तानबूद करके छोड़ते हैं।

कोई कार्य चाहे कितना ही बड़ा हो, वह अपने नेताओं के भ्रष्टाचार और अयोग्यता के विध्वंसक प्रभावों से नहीं बच सकता। शोक की बात तो यह है कि अयोग्य और भ्रष्ट नेता अपने अंह से अन्धे हो कर यह महसूस नहीं करते कि वह अयोग्य और भ्रष्ट हैं। वह रोशनी जो विपथगामी और भ्रष्ट नेताओं की (वह भी तब जब वह कुछ अधिकारी हो) नेता-गिरी की भयानकता को दिखा सकती है, उस रोशनी से वह वंचित रहते हैं। यह रोशनी वह महान् रोशनी है जिस को देव-ज्योति कहते हैं। यह उस अद्वितीय आविर्भाव में पैदा हुई है, जिसको देवात्मा कहते हैं। देवात्मा की हस्ती मे निराली अद्वितीय देव शक्तियां पैदा हुई हैं। यह देव शक्तियां सत्य और शुभ का पूर्ण अनुराग ओर मिथ्या अशुभ के प्रति पूर्ण घृणा शक्तियां हैं। किसी कहलाने वाले खुदा या देवी-देवताओं, पैग़म्बरों, अवतारों, सन्त, मुनि, महात्मा, ऋषि में इन देव शक्तियों का प्रकाश और विकास नहीं हुआ। इसलिए नाना धर्मसम्प्रदायों में ऐसी देव ज्योति नहीं थी और नहीं है। यह देव शक्तियां केवल और केवल देवात्मा में विकसित हुई हैं। उन देवात्मा में ही देव ज्योति का प्रकाश हुआ है। यह ज्योति ही उस अन्धकार को दूर कर सकती है, जो अंह-अनुराग से पैदा होता हैं यह अन्धकार केवल उन आत्माओं का दूर हो सकता है, जो अधिकारी हों। काश! कि यह महा कल्याणकारी ज्योति देवात्मा के महान कार्य को उन अयोग्य और पतित और भ्रष्ट मनुष्यात्माओं से बचाए।

(महान कार्य कैसे नष्ट हो जाते हैं?)

धर्म जीवन

खण्ड 25 अंक 1

जनवरी - 2012

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

परम पू० भगवान देवात्मा का 161 वाँ शुभ जन्म महोत्सव

परम पू० भगवान देवात्मा जी का 161 वाँ जन्म महोत्सव 9 दिसम्बर से 12 दिसम्बर 2011 तक शुभ वती धर्मशालाा सैक्टर 18-डी में पिछले वर्षो की तरह इस वर्ष भी पूरे चाव भाव से मनाया गया। इस शुभ अवसर की सफलता के लिए विशेष तैय्यारियां की गई। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने अपने साथियों के साथ बहुत सारे स्थानों का दौरा किया। सेवकों और श्रद्धावानों को इस शुभ अवसर पर पहुंचने की प्रेरणा की। फोन पर भी सम्पर्क किया गया। धर्म जीवन और हितस्त्रोत के विशेष अंक निकाले गए, उनके द्वारा भी महोत्सव का शुभ संवाद सेवकों वा श्रद्धावानों तक पहुंचाया गया। सैंकड़ों सुन्दर निमन्त्रण पत्र छपवाकर अधिकारी जनों को पोस्ट किए गए।

चण्डीगढ़ में महोत्सव से कुछ दिन पहले प्रतिदिन सभा रखी गई, जिनमें आदेशों का पाठ व्याख्या की गई। यह सभाएं श्रीमान बलदेव सिंह जी करवाते रहे हैं। कई जनों ने इससे लाभ उठाया।

महोत्सव की सभाओं के लिए पहले की तरह पण्डाल बनाया गया और सुन्दर तरपाल से ढका गया। पण्डाल को अन्दर से बहुत सुन्दरता से सजाया गया। गुरू महाराज की बड़ी फोटो को सुन्दर ढंग से स्थापित किया गया। हाल को जगदीष जी और बी० एड० डेराबस्सी की लैक्चर वा लड़कियों ने बहुत सुन्दर ढंग से सजाया। सुन्दर गेंदे से लदे फूलों के वा अन्य गमलों से स्टेज के साथ 2 रखकर सजाया गया। चारों तरफ सफेद चादरों से पण्डाल सजाया और उन पर गुरू महाराज की देव बाणी के माटोज़ लगाए गए। आंगन में नये नये झण्डे लगाए गए। धर्मशाला की छत पर बहुत बड़ा विजय पताका सुशोभित किया गया, जो बहुत सुन्दर लग रहा था। सारी सजावट देखने वालों को खुशी से भर रही थी।

इस सारे संग्राम में जगदीष जी के साथ मधू सूदन जी, जलधर जी और प्रदीप जी ने बहुत सहायता की। हमेशा की तरह बैंड का भी प्रबन्ध किया गया।

धर्मशाला के कमरे साफ किए गए। पानी के टैंकर का प्रबन्ध किया गया।

स्नान आदि के लिए गर्म पानी का प्रबन्ध किया गया, इसमें मधू सूदन जी और जगीर सिंह जी केसूपुरा ने खुशी खुशी सेवा की। ओम प्रकाश जी वर्मा किताबों की स्टाल पर भी अपने साथियों सहित सेवा करते रहे। दफतर का सारा प्रबन्ध जगदीष जी और अपने बेटे विनय कुमार जी के

साथ करते रहे। Tempo द्वारा समान ढोने का काम भी उन्होंने करवाया। हररोज़ अर्चन के लिए भी सुन्दर हार का प्रबन्ध जगदीष जी करते रहे।

गुरूदेव राज जी केसूपुरा विशेष दिन पर सुबह अपनी पार्टी सहित बुहुत श्रद्धा और उत्साह के साथ भजनों का गान करते रहे। बच्चों की सभा मिसिज सुरजीत बराड़ ने Conduct करवाई और ईनाम वितरण में सरोज जी और मोना जी ने help की।

11 दिसम्बर की दुपहिर को डेरा बसी B.Ed कालिज की लड़कियों ने सुन्दर भजनों का गान किया। एक भजन दत्ता जी ने बहुत सुरीली अवाज़ में गाया, बहुत सुन्दर मण्डल बना।

खाने का प्रबन्ध बहुत अच्छा रहा, Canteen का प्रबन्ध उतना अच्छा नहीं हो सका।

नीचे लिखे प्रान्तों से बहुत अच्छी गिणती में यात्रीगण पहुंचे। पंजाब, हरियाना, दिल्ली, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, यू०पी०, उत्तरांचल, बिहार, अमरीका, कैनेडा आदि से यात्री पधारे।

टरांटो, वैनकूवर, दिल्ली, कल्याण, अम्बाला, काला अम्ब, मण्डी डबवाली, बन्नी, बुंगी, चण्डीगढ़, मोहाली, पंचकूला, दड़वा, देहरादून, रनीयां, मोगा, केसूपुर, मल्लेका, डेराबसी, गजसिंह पुरा, पदमपुर, गंगानगर, पटियाला – भंटिडा, मानसा, गोनियाना मण्डी, महिमा सवाई, संगरूर, यमुना नगर, थराजवाला, भुज (गुजरात) आदि स्थानों से यात्री पहुंचे। कोचिंग सैंटर के बच्चे भी एक लैक्चर में आए।

महोत्सव की सब सभाएं बहुत प्रभावदायक हुई।

<u>9.12.2011 शाम 4.30 बजे, प्रवेश सभा</u>

सभापति – श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

सभा का दूसरा घण्टा बजने के साथ श्रीमान जगदीष जी ने "हमारे पू० भगवान, जी तुम हो धन्य" नामक भजन का ऊंचे स्वर में गान आरम्भ कर दिया। जिसके साथ ही महोत्सव मुबारक की कार्यवाही आरम्भ हुई।

भजन के बाद सुन्दर हार द्वारा भगवान देवात्मा जी का सुन्दर छवि द्वारा अर्चन किया गया। सबने मिलकर देव स्तोत्र का खड़े होकर गान आरम्भ किया। सभापति जी ने सुन्दर व्याख्या की और "फिर बड़े धन्य भाग्य उनके है।" नामक भजन गाया गया। फिर सभापति जी ने ब्यान आरम्भ किया। उन्होंने कहा कि हमारे जीवन की एक सचाई है कि हम सब सुख को प्यार करते हैं। सुखों के हम गुलाम हैं। यह सुख हमें नीच और पापी बनाते हैं। विश्व में इसके नियम काम करते हैं। उच्च नियम पूरे करके हम अपना भला कर सकते हैं। जितने हमारे दिल अधिकारी वा नम्र होंगे, प्रार्थना शील होंगे, उतने ही हम देव प्रभाव पा सकेंगे।

सभापति जी ने परम पू० भगवान के दरबार में सहाय प्रार्थन की। हे मानव जगत के सरताज, बचावनहार भगवन। हे पूर्ण सत्य वा शुभ अनुरागी भगवान! हम महोत्सव मुबारक की प्रवेश सभा कर रहे हैं। हमारी औकात हमें अन्धकार में रखती है। हम दुर्बल और गरीब और तुच्छ आत्माओं, अति लाचार वा असहाय जनों को आपके देव प्रभावों का दान मिल सके, जिससे हमारे अन्तकरण रोशन हो सकें। जिससे हम अपने आपको, अपनी नीचता को, अपने रोगों को देख सकें। अपने आपका दुश्मन रूप नज़र आ सके। हम जीवन तो रखते हैं, परन्तु जीवन ज्योति नहीं रखते, जीवन

शक्ति नहीं रखते। आपके प्रभाव हमारा नीच जीवन दिखाने, आपकी शक्ति हमें उससे निकालने के लिए तत्पर है। आपने पहले जो हमारा भला किया है, उसके लिए हम कृतज्ञ अनुभव कर सकें। कृतज्ञता से भर सकें। आपके अद्वितीय मिशन में कुछ अहुति दे सकें। यह जीवन बर्बाद करके न जाएं, इसको सफल कर सकें। आपका दान मिले, सहायकारी हमारी सहायता करें। हमारा शुभ हो, हमारा मंगल हो। यह महोत्सव मनाना अधिक से अधिक सफल, हितकर और कल्याणकारी हो।

आगे सभापति जी ने अपना ब्यान आरम्भ किया। परम पू० भगवान देवात्मा विश्व में सर्वोच्च हस्ती हैं। उनके अद्वितीय देव प्रभाव ही सर्वोच्च पर्दाथ हैं। इनके द्वारा हमारा सब प्रकार का हित होता है। ऐसा दान पाना ही हमारा विशेष मकसद है। आप सब यात्री बहुत मुबारक हो, जो कई दिक्कतों को पार करके इस दुर्लभ अवसर पर पहुंचे हो। मैं आप सबका (खड़े होकर) बहुत बहुत स्वागत करता हूं। जी आयां कहता हूं। आपका पधारना बहुत बहुत मुबारक!

आगे फरमाया, इस संसार में अति भयानक कत्ल की, रेप की और व्यभिचार की, बैंक लूटने की घटनाएं पैदा होती हैं। आए दिन ऐसा होता है।

परन्तु इस स्थान पर जो आगे तीन दिन सभाएं होगीं, उनके द्वारा महान और उच्च वातावरण पैदा होगा, वह और ही दुनियां है, हम अपना आप देखकर रोते ही जाएंगे। हमारा बहुत भला होगा।

जिस दशा में हम और हमारे बच्चे भागे जाते हैं, वह सारा मौत का कुआं है। भंवरी देवी नर्स के कतिल की घटना आजकल प्रसिद्ध है। प्रमोद महाजन का भाई द्वारा कतल की भयानक घटना थी। यदि ऐसे कातिलों को 8 - 10 दिन गुरू महाराज की प्रभाव दायक संगत मिल जाती, तो वह ऐसा कभी न करते। हरियाणा के पुराने एम. एल. ए. रेलू राम की पुत्री ने अपने ही परिवार के 8 सदस्यों को एक ही दिन में कत्ल कर दिया। हमारी दौड़ धन धरती वा अन्य सुखों की प्राप्ति की ओर है। हमारा स्वार्थ, हमारी नीचता, हमें सुखों की चाट द्वारा पागल बनाती है। हमें दूसरों की हानि करने के लिए, दूसरों के हक हरने के लिए उतेजित करती है। दूसरों की हानि वा हक़ को मारना इस दर पर नज़र आने लगता है।

एक बार एक स्कूल के मास्टर ने श्रीमान जी के पूछने पर कि वह बुझे बुझे क्यों रहते हो, बताया कि जब से भाई की पत्नी को दूध भरी बाल्टी लेकर जाते देखा है, उस समय से दिल जल रहा है। बहुत दुखी हूं। यह पूछने पर कि आपका मूड कैसे ठीक होगा, तो उन्होंने कहा कि यदि भाई की भैंस को सांप डस जाए, तो मैं सुखी हो सकता हूं।

प्रसिद्ध आसा सिंह मस्ताना यह गाया करते थे कि यह दुनियां रहने के योग्य नहीं। मानव समाज की हालत सचमुच ही ऐसी भयानक है। भाई भाई, बाप बेटा, बहन भाई, मां बेटी, बहू सास और सम्बन्धियों में नर्क फैला हुआ है।

भगवान के दान की कीमत आंकी नहीं जा सकती। कल्याण सत्संग में आखरी दिन एक टीचर जोड़ा आ गया कि यदि मैं यहां न आ पाती तो बड़े घाटे में रहती। मेरी बड़ी बहन जो मेरे लिए रब के समान थी, जिसने बचपन में मुझे मां की तरह पाला, मेरी जुएं निकाली, मुझे नहलाया, मुझे गोदी खिलाया, अन्त का प्यार किया, उसने मुझे एक काम करने

को कहा, पर मैंने रब जैसी बहन को जबाब दे दिया मैं खुदगर्ज ने उनकी सेवाएं भुला दी। वह बहुत रो रही थी और कहा कि मैं अपनी बहन से मुआफी मांगूगी और उसके बेटे को बुलाऊंगी। अपने पास रखकर पूरी सहायता करूंगी उन्होंने ऐसा ही किया। यही नहीं और भी कई प्रकार से सहायता की। हम उच्च वातावरण से उच्च प्रेरणाएं लेकर जाते हैं, हम उच्च व्यवहार करते हैं, यही धर्म है।

उच्च भावों, उच्च व्यवहारों के बिना हम केवल जीती जागती लाशें ही रह जाते हैं।

फिर श्रीमान जगदीष प्रसाद जी का उच्च परिवर्तन, बहुत प्रभाव शाली ढंग से पेश किया गया। उन्होंने कैसे अपने नीच जीवन को देखा, कैसे पहली ही सभा में देखा मैं नीच जीवन द्वारा बर्बाद हो जाऊंगा। मां के चरणों में गिरकर मुआफी मांगी सदा के लिए मोटे पापों से बच गए। परिवार का बहुत भला हुआ है।

आगे बताया कि इस दर पर गुरू महाराज के देव प्रभावों को पाने के लिए कुछ नियम पूरे करने ज़रूरी हैं :-

1) सेवक सेविका कल से पीली पगड़ियां वा दुपट्टे पहन कर सभाओं में आकर बैठें।

2) समय पर सभाओं में आएं। दूसरा घण्टा बजते ही सभा में आ जाएं, यह नियम पूरा करके भला होता है।

3) किसी प्रकार की निन्दा चुगली न करें, हो सके तो अपने दोष देखें जिस से देव प्रभाव पाने का बन्द मार्ग खुल सकता है।

4) गुरू महाराज के दर से पाई बरकतों को याद करके दिल धन्यवाद से भरें।

5) गुण चिन्तन करो, अपना साधन करके आओ।

6) सभा में बैठकर प्रार्थना करो, कि हमें ज्योति मिले, हमें प्रभाव मिलें, हमारा ध्यान अपनी तरफ जाए, जिस नीचता से भगवान ने हमें निकाला है, उसे स्मरण करके भगवान को धन्यवाद दें।

अनुरागी शिष्य श्रद्धेय श्रीमान परमेश्वर दत्त जी के उच्च रूप को पेश किया, यदि उन्हें परम पू० भगवान का दर न मिलता, तो वह कहां होते।

सभापति जी ने कहा कि मुझे फटकारें पड़ रही हैं कि मुझ नीच को, काठ के उल्लू को, सभा करवाने का अधिकार मिलता है, क्योंकि उच्च आत्माओं का आकाल पड़ा हुआ है। हम तो पापों के किले हैं। यदि हमें नीच जीवन से निकलने की प्रेरणा मिल जाए, तो हम तो फूले न समाएं। हमें भगवान का दर मिल गया। हमें हमारी नीचता खा जाती । जितने हमने देव प्रभाव पा लिए तो समझो महोत्सव पर आना सफल हो गया।

एक एक धर्म सम्बन्धी बोलता है कि कोई मुझे 10 किलों आटा उधार नहीं देता था, अब 50-50 हज़ार और लाख रु० का भी विश्वास करते हैं। गुरु महाराज के असरों से हमारी कीमत बढ़ती है। मेरे जैसे भूत को श्रीमान जी बना दिया।

इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सभापति जी को प्रभावशाली सभा के लिए धन्यवाद दिया, यात्रियों का स्वागत किया, सूचनाएं और डियूटीयां बताई। अगले दिन का प्रोग्राम बताया। चार बार जय ध्वनि से सभा समाप्त हुई।

10.12.2011

सभापति जी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

विषय :- देवात्मा का परम अवश्यक जीवन दायक सम्बन्ध

सबसे पहले, अहो! भाग्य सत्गुरु, तुम्हें मैंने पाया," वाला भजन गाया गया। फिर परम पू० भगवान देवात्मा का पवित्र छवि द्वारा सुन्दर हार से अर्चण किया गया। देव स्तोत्र का गायन किया, सभापति जी ने उसकी व्याख़्या की। फिर सभापति जी ने गहरे भावों से सहाय प्रार्थना की।

हे परम पू० भगवान जी, हमारे बचावन हार, तारणहार सत्गुरु! आप ही के प्रबन्ध से हम आपका जन्म महोत्सव मनाने जा रहे हैं। आपके अद्वितीय प्रभावों से ही हमारा शुभ होता है। आपके प्रभावों द्वारा हमारा शुभ हो सके। हम दुर्बलों, मलीन और तुच्छों पर आपकी कृपा हो सके। हमारे अन्ध, मदहोश और पागल हृदय कुछ होश में आ सकें। हम आप जी के अमृत-मई प्रभावों के अधि कारी बन सकें। हमें हमारा आत्मा कीमती नज़र आ सकें। उसके बचाने वा उसके शुभ के लिए जिस प्रकार आपके प्रभावों की अवश्यकता है, वह हम देख सकें। आपके सम्बन्ध की हमें आवश्यकता है। वह हम देख सके। हम रूहानी मुर्दों को अपनी ज्योति दो। हम अपने जीवन बर्बाद करके न जाएं। हमारी अन्धता वा कठोरता दूर हो सकें, हमारे हृदय नम्र हो सकें। हम मनुष्य कहलाने के योग्य हो सकें। आपके देव दरबार में यही कामना है कि आपके प्रभाव हमें मिल सकें। आपका अमृत हमें मिल सकें। हमारा शुभ हो। नेचर की सहायककारी शक्तियों की सहायता मिल सके। आपकी ऐसी करूणा और आपका आर्शीवाद हम तुच्छों को प्राप्त हो सके।

इसके बाद विषय अनुसार "परम अवश्यक, जीवन दायक, मेरे भगवन का सम्बन्ध" नामक भजन गाया गया। सभापति जी ने अपना ब्यान आरम्भ करते फरमाया, मैं शर्म से पानी पानी हो रहा था कि इस सभा को करवाने के लिए ऐसे उच्च जीवनधारियों की अवश्यकता है, जिन्हें आत्मा, जीवन में मुख्य वस्तु दिखाई देती हो, जिनका लक्ष्य नीच जीवन से मोक्ष और सात्विक भावों को विकसित करना बन गया हो, ऐसे गुरू के प्रेमकों की आवश्यकता है, जिनका सम्बन्ध भगवान के साथ बन गया हो। हम इस कदर गरीब और कंगाल हैं कि इस ज़रूरी विषय पर सभा कराने वाले योग्य जन हमें प्राप्त नहीं। हमने कुछ न कुछ तो बोलना है।

हमारे वजूद में दो चीज़े हैं। एक आत्मा और एक शरीर है। हवा, आक्सीजन, जो हमें बेजान होकर भी जीवन देते हैं, हम इस पक्ष में भी बहुत ग़ल्त जा रहे हैं। अभी जर्मनी के बौन शहर में ऐसे ब्यान दिए गए हैं कि हम सन 2020 में इस सम्बन्धी पूरे प्रबन्ध कर लेंगे, ज़रूरी नियम पूरे करेंगे। आक्सीजन गैस हमारा जीवन दायक सम्बन्ध है। इसलिए सब जीवनधारियों के लिए पानी भी जीवन दायक सम्बन्धी है। यह सम्बन्धी परम अवश्यक हैं। पौधे और खुराक सभी जीवन दायक सम्बन्धी हैं। धरती भी जीवन दायक सम्बन्धी है।

यदि सूर्य न हो, हम जिन्दा नहीं रह सकते, हमें जीवन माता पिता से मिला है।

वह कौन सा अस्तित्व है जिसके लिए भगवान का सम्बन्ध जीवन दायक और परम अवश्यक है। हमारा जो आत्मा है, उसे देखने, जानने के लिए, उसको बचाने के लिए, उसको उन्नत करने के लिए भगवान के सम्बन्ध की पूर्णत: आवश्यकता है।

हमें शरीर और उसके अंग नज़र आते हैं। एक और है जो हमारे अन्दर है। वह जीवनी शक्ति

वा आत्मा है, उसको आम धर्मो ने नहीं जाना। यदि जाना भी है, तो उल्टा ही जाना है। उसको ग़ल्त ही देखा। उसको ब्रह्म का रूप, खुदा की फूंक, खुदा का हुक्म ही जाना, जो कि बेअर्थ बात है। फिर इसको अमर, नित्य, अनादि, सदा से है, निर्लेप, अजन्मा ही समझा। यह सब कुछ ग़ल्त है। मनुष्य के भीतर जितनी सात्विकता बढ़ेगी, सांईस का अधि कार होगा तो कुछ समझ आएगा।

सचाई यह है कि आत्मा जन्म लेती है, रोगी होती है, मरती भी है।यह जीवनी शक्ति है, इसको जानने की आवश्यकता है।

विकास क्रम में भगवान देवात्मा का रूप अद्वितीय है, उनकी देव ज्योति मिलेगी, तभी आत्मा की समझ आऐगी। तब ही आत्मा मुख्य नज़र आएगा।

हमारे भाव खराब हैं, नीच गति दायक हैं, उनके साथ हमारे वजूद की हानि होती है। स्वार्थ नीच गति दायक है, घमंड, नीच घृणा, ईर्षा द्वेष, मोह बन्धन धन अनुराग और वासनाएं हमें दरिंदा बनाती हैं, यहां तक कि देश भक्ति अकेली भी उचित नहीं, इसमें भी स्वार्थ रह जाता है।

मैं ब्रह्म हूं, यह अन्धकार की बात है। हम नीचता के कीड़े है, गंदगी के कीढ़े है, यह वास्तिवकता है, सचाई है। मेरे 2 भूआ के लड़के थे। वह नशे के घोर अनुरागी हो गए। मुझसे केवल 2 साल बड़े थे। बेक़त मर गए। मैं उन्हें चण्डीगढ़ De Addiction Centre लेकर आया, परन्तु वह नशे छुपाकर खाते रहे। आख़िर वहां से भाग गए। 2 - 3 दिन बाद ही मर गए। हमे बचाने वाले बुरे लगते हैं।

जब तक नीच रोग भयानक नज़र नहीं आते, उनसे मुक्त होने की ज़रूरत बोध नहीं होगी। जब रोग नज़र आएंगे, तब हम रोग बताने में झिझकेंगे नहीं। क्रिकेट पर लिखने वाले प्रसिद्ध लिखारी के बारे में किसी ने प्रगट कर दिया कि एक समय उसने उसे sexually abuse किया था, वह यह सहन न कर सका और आत्म - हत्या कर ली।

न - शुकरे का, ज़ालिम का, कामी कुत्ते का जीवन कोई जीवन नहीं होता। हृदय की शुद्धि से जीवन बनता है। पवित्रता का, श्रद्धा का, कृतज्ञता का जीवन ही जीवन कहा जा सकता है।

डा० मन्शा सिंह जी पदमपुर खास जीवन रखते हैं। मैं अपने मन में सैंकड़ों बार उन्हें प्रणाम करता रहता हूं। उनके भीतर भी जो कमी है, उससे उद्धार पाने के लिए भी भगवान देवत्मा के सम्बन्ध की आवश्यकता है। जब इतने अच्छे, बड़े भजनीक भगत कहते हैं कि भगवान रोशनी के बिना मुझे पता ही नहीं चलना था कि उपकारी क्या होते हैं, अंह अनुराग क्या होता है? मैं अपने गुरु उस्ताद से झूठ मारकर सूद सहित पैसे वसूल कर लिए। अपनी कृतघन्नता नज़र आई। गुरु घाती बना दिखाई दिया। मैं 13 - 14 धर्मो में भ्रमण किया, सालों के साल बीत गए मुझे यह अपना रूप दिखाई नहीं दिया।

हमें नीच गतियों, नीच कर्मो से बचने के लिए भगवान देवात्मा के सम्बन्ध की अवश्यकता है। उनके देव तेज की अवश्यकता है।

हमें उच्च कर्म, भले कर्म करने के लिए, उच्च गति प्रद भावों को जाग्रित और विकसित करने के लिए भगवान देवात्मा के सम्बन्ध की अवश्यकता है।

हमें पहले अपने माता - पिता बुरे लगते थे,

भगवान के प्रभावों से वह अच्छे, बहुत अच्छे, प्यारे वा अपने श्रद्धा-भाजन नज़र आने लग गए। जब नज़र नहीं आते थे, तो अपनी मां को डांटा, ऊंचा बोला, मां रोती रही, दुखी हुई, यह सब कुछ पहले नज़र नहीं आया।

जब और जितना सम्बन्ध गुरु से बनता है, उतना ही जीवन शुद्ध होता है, जब हमें मां बाप का, पड़ोसी का, पशुओं का दुख नज़र नहीं आता, तब भगवान अपनी ज्योति संचार करके दिखा देते हैं।

पहले एक बी०ए० पास जन को अपने पिता जी का कोई गुण नज़र नहीं आता था, जब उन्हें भगवान की रोशनी मिली तो सम्मान पैदा हो गया, तब कहने लगे कि मैं अपने पिता को अब सम्मान तो देता हूं, परन्तु उतना सम्मान नहीं दे पाता जितना सिक्ख साहिबान गुरु ग्रन्थ को देते हैं, पिता इतने सम्मान के योग्य हैं।

नीच जीवन से मोक्ष पाने का संग्राम गुरु महाराज के साथ कुछ सम्बन्ध पैदा होने के साथ ही आरम्भ होता है, नहीं तो नहीं।

पत्थर मारने वाले और रांड का सिर फोड़ने वाले को गुरु ने मां का रुप दिखा दिया। उन्होंने प्रीती से मां की सेवा की, मां ने यह सर्टीफिकेट दिया कि बेटा, तूने मेरे पेट पड़े का बदला चुका दिया।

हम गन्दी कमाई खाने वालों को गुरु ने दिखाया। लाला जुल्ली राम जी कानूगो, दीवान हासामल जी से नजायज़ कमाई छुड़वा दी।

सरदार हरनाम सिंह जी को अपना राक्षस, कातिल, कसाई रुप दिखा दिया। भगवान के प्रभावों का थोड़ा अमृत मिल जाने पर हमें नया रुप मिल जाता है। श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी को पवित्रता का, श्रद्धा का, शुक्रगुजारी का, गुरु सेवा का, पर उपकार का जीवन देकर फरिश्ते बना दिया।

हम जीवन जीते नहीं, हम रींगते हैं। काश! हम इस रींगने से निकल सकें। गुरु के सम्बन्ध को अधिक से अधिक देख सकें! गुरु के बन सकें, जो हमारे हित के लिए तड़प रहे हैं।

10.12.2011

4.30 बजे पब्लिक लैक्चर

भजन : "शरण तुम्हारी आकर सत्गुरु, जीवन का पथ दिखता है।"

वक्ता : प्रिंसीपल श्रीमती सुरजीत बराड़।

सभापति : श्रीमान डा० विनोद कुमार जी खेड़ा।

विषय : परम पू० भगवान देवात्मा की शरण में आकर मेरे पिता वा परिवार को विशेष लाभ।

परिचय : डा० विनोद जी खेड़ा ने प्रिंसीपल मिसिज़ सुरजीत बराड़ का परिचय करवाया कि 1997 तक वह देव समाज सीनियर सैकण्डरी स्कूल की प्रिंसीपल रहीं। उनमें प्रबन्ध की विशेष योग्यता है। सबसे बड़ी योग्यता श्रीमान बलदेव सिंह जी का गुरु मिशन के काम में साथ देने की है। हर पहलु में वह बहुत Organised हैं। स्कूल में ऐसे दृष्यों का परिचय मिलता था। बच्चों के लिए विशेष तड़प है।

उसके बाद वक्ता ने अपना ब्यान शुरु किया कि मेरे पिता का जन्म 1917 में एक सम्पन्न परिवार में हुआ। उनमें प्रबन्ध की विशेष योग्यताएं थी। उन्हें बहुत सुन्दर शरीर, बहुत अच्छी मान्सिक योग्यताए वा श्रद्धा, कृतज्ञता, सहानुभूति वा कठिन परिश्रम करने की हार्दिक योग्यताएं विरासत में मिली थी। थराज गांव में डाक्टरी की प्रैक्टस शुरु की। एक मरती हुई लड़की को बचाया, इससे

उनकी शोहरत निकट के गावों तक फैल गई। कमाई बहुत बढ़ गई, शराब की महिफलें सजने लगी, मांस खाने लगे और तीन बेटियों के होने पर दोस्त मित्र दूसरी शादी के लिए प्रेरित करने लगे। उनके दादा दादी सेवक बन गए थे। दादा जी उनके पास आए तो माता जी ने उन्हें पिता जी की शराब मांस खाने पीने के विषय में बता दिया। उन्होंने कर्मचारियों को प्रार्थना की कि उनके पोते को बचाओ। तीन कर्मचारी वहां पहुंचे, उनके शुभ कदमों ने पिता जी वा परिवार की काया कल्प कर दी। पिता जी को सभा के लिए कहा तो उन्होंने फौरन धर्मशाला में प्रबन्ध कर दिया। 200 के लगभग लोग शामिल हुए, श्रीमान नेतराम जी ने अपना परिवर्तन सुनाया, पिता जी हिल गए और उसी सभा में मास शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा कर दी। सत्संग रखने शुरू कर दिए। 1943 में लहौर गए और सेवक बन गए।

उस गांव की बुरी संगत से बचने के लिए, रात के अन्धेरे में दूसरे गांव में जाकर रहने लगे। समाध भाई में बड़े बड़े सत्संग रखे, सैंकड़ो की तदाद में लोग शामिल होते थे। अपने भाईयों और अन्य रिश्तेदारों को बचाया। मोगा धर्म विकासाल्य में जाना शुरु किया और यह प्रेरणा मिली कि गुरु मिशन में काम आना है। कुछ जनों की मौत और डाकुओं के आतंक से यह जीवन कभी भी ख़त्म हो सकता है, ऐसा एहसास जागा और एक दिन सब कुछ सम्भाल कर मोगा में डेरा लगा लिया। 15 दिन प्रचार के लिए जाते और 15 दिन विकासालय की सभाएं सुनते और धन्य धन्य रहते थे। थराज में एक सत्संग रखा, जिसमें माता जी ने अपनी झोली फैलाकर शराब मांस को छोड़ने की भेंट मांगी, दर्जनों नौजवानों ने पाप छोड़े। नम्बरदार गुरवचन सिंह जी भी इसी गांव से बचे। श्रीमान रुप चंद, श्रीमान सुरजन सिंह जी, श्रीामन डा० गुरचरण सिंह जी और अन्य ऐसे दर्जनों जनों को उन्होंने समाज से जोड़ा।

ऐसे हालात हुए कि विकासालय छोड़कर उन्हें यू०पी० फार्म पर जाना पड़ा, जाते वक्त धाएं मार मार कर रोते थे, परन्तु विरोधी हालातों में भी वहां प्रचार पार्टी मंगवाते रहे। थाना सिंह के परिवार को और उनके समधी के परिवार को पापों से बचाया।

फिर वापिस आकर उन्होंने चण्डीगढ़, अम्बाला, सोलन और श्री अकबर पुर में बिलडिंग बनाने में अपने आपको पूरी तरह से झोंक दिया, अपनी खराब सेहित की परवाह नहीं की। उन्हें समाज में बूढ़े जरनैल की उपाधि से नवाज़ा गया। वह गुरु मिशन के अनथक सिपाही थे।

मेरे माता जी ने अनपढ़ होकर विकासालय पास किया, लेख लिखा, "शरण तुमरी न आती मैं तो क्या होती कहां होती" पिता जी का दिलोजान से साथ दिया। ऐसे माता पिता की सन्तान होने पर मुझे गर्व है।

यह सारा ब्यान बहुत भावपूर्ण और प्रभाव दायक था।

श्रीमान प्रेमचन्द जी बन्नी :- मैं 1998 में सेवक बना 1986 से 1995 तक सच्चा सौदा में जाता था। मेरी कमीयां यहां आकर दिखाई दी है। मैं एक बात पर पिता से रुठ गया और खाना नहीं खाया। पिता के भीतर पशुओं के लिए हमदर्दी थी। वह दूध पीते बछड़े को लावारिस छोड़ने को तैय्यार नहीं थे, मैं जिद करता था कि इसको रखने का कोई लाभ

नहीं, इसलिए रुठा हुआ था। माता पिता से अलग होने का बहाना ढूंडता रहता था। शराब पीकर घर चला आया दूसरे दिन मुझे अलग कर दिया। चाचा जी से उधार लेकर नहीं दे रहा था, चाचा जी भैंस ले गए, परन्तु गुरु की संगत से बैठकर उनके दबाए रु० वापिस किए, सम्बन्ध मधुर बन गया। आत्म हत्या करने की कोशिश की। परन्तु अब घर स्वर्ग बन गया है, बच्चे अच्छे स्कूलों, कालिज़ों में पढ़ रहे हैं। रिश्ते सुधर गए। सभापति जी ने दोनों वक्ताओं को धन्यवाद किया।

11.11.2011, महोत्सव का विशेष दिन :

भजन कीर्तन और शुभ कामना, समय सुबह 6.30 बतते :- इस दिन यात्री सुबह सुबह नहा धोकर अपनी सुन्दर पोशाकें पहनकर धर्मशाला खुले आंगन में इकट्ठे होने शुरू हो गए। श्रीमान गुरूदेव राज केसूपुर सदा की तरह भजन गाने शुरू किए। धीरे धीरे अच्छी संख्या में सेवक सेविका वा श्रद्धावान इकट्ठे हो गए। फिर जगदीष जी भी पार्टी में शामिल हो गए। बड़ा सुन्दर नज़ारा पैदा हो रहा था। सबके हृदय पाक खुशी और श्रद्धा से भरे हुए थे। सूरज की पहली किरण के साथ, जो भगवान के जन्म का समय है, घण्टा बजना शुरू हो गया, तब सबने भगवान देवात्मा की जय जयकार बुलन्द कर दी। बैंड, बाजा बजने लगा, फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने मन्त्री देव धर्म ने तख़्त पर खड़े होकर सबको इस दिन की सबको बधाई दी। मानवता के सौभाग्य वर्णन किए। अनोखे कारज के चारों ओर फैलने की कामना की। हमें इस दिन मिशन में अधिक से अधिक योगदान देने की जरूरत महसूस करवाई। जय ध्वनि से य कामना समाप्त की गई।

बैंड बजता रहा और कुछ धर्म सम्बन्धी उसकी तान नाचकर अपनी खुशी प्रगट करते थे। फिर सब यात्रियों ने हारों द्वारा गुरू महाराज की छवि के आगे अपनी श्रद्धा को प्रगट किया।

11.12.2011, 9 बजे सुबह - महा सभा

सभापति जी - श्रीमान बलदेव सिंह जी।

भजन - "अद्वितीय जीवन ब्रत धारी, अद्वितीय महिमा है तुम्हारी"

सभापति जी ने फरमाया कि परम पू० भगवान देवात्मा के महोत्सव पर आने वाले सौभाग्य वान यात्रियों! इस ब्रह्मण्ड की कोई सीमा नहीं। इसके अन्दर अटल नियम काम करते हैं। पानी सदा नीचे को बहता है। नेचर का विकास का नियम पहले से बेहतर इन्सान पैदा करता है। इस नियम के द्वारा ही देवात्मा का अर्विभाव हुआ है। हमारा सौर्यमण्डल कैसे बना, उसका ब्यान किया। कैसे पृथ्वी बनी उस पर जीव जन्तु, पशु पौधे वा इन्सान पैदा हुए। पशु स्वार्थी होते हैं, इसलिए मनुष्यों में भी वही प्रकृति आई है। मनुष्य के लिए सुख का अनुरागी होकर सुखार्थी वा स्वार्थी होना अवश्यम्भावी है। देवात्मा में बचपन से ही सत्य और शुभ के अनुराग के अंग पैदा हुए। उनको ऐसे गुरु मिले, जिससे सत्य अनुराग का विकास हुआ। सारे मनुष्य मात्र में देवात्मा की श्रेणी बिल्कुल भिन्न है। उनका जीवन सब सम्बन्धों में आदर्श जीवन था। सात्विक भावों से सात्विक ज्योति पैदा होती है, परन्तु देवात्मा के देव जीवन से देव ज्योति पैदा हुई, जिससे आत्मिक दुनियां खुलती है। पता लगता है कि आत्मा क्या है, आत्मा के रोग क्या हैं, आत्मिक परिवर्तन क्या है, आत्मा का पतन वा विनाश क्या है?

मनुष्य चार प्रकार से रसातल में गिरा हुआ है: -

1) मनुष्य अज्ञानता में फंसा हुआ है

2) वह मिथ्या ग्रस्त है

3) नीच सुखों का गुलाम होकर भेड़िया बना हुआ है, नर्क पैदा करता है।

4) चौथी रसातल अंह मूलक ईर्षा, द्वेष, स्वार्थ, नीच घृणा आदि नीच सुख हैं। परम पू० भगवान देवात्मा ने मनुष्य का लक्ष्य रोशन किया है, वह है आत्मा की मोक्ष और विकास। हमारे लक्ष्य नीच हैं, मुझे 28 - 30 वर्ष यह पता नहीं लगा कि मैं कितना बड़ा अंह प्रेमी हूं। अब 20 - 25 वर्ष से उसे घटाने में लगा हुआ हूं।

"बचाना मरती रूहों को, मिशन अपना बनाया है"।

उपरोक्त चार रसातलों से देवात्मा मनुष्य मात्र को निकालने की समर्थ्य रखते हैं। मैं समाज में अपनी तरफ से समाज का काम करने आया था परन्तु पताही नहीं था कि मैं कि काम अनुराग, आलस्य अनुराग, अंहकार, धन धरती के अधिकार में हूं। विनाश की रेल में सवार था। यह विनाश की रेल के स्टेशन श्रीमान बलबहादुर सिंह जी को नज़र आए। उनके जीवन पर देव प्रभावों का कारज हुआ।

देवात्मा ने मानवता की भलाई के लिए जीवन ब्रत ग्रहण किया, परन्तु उनका स्वागत नहीं हुआ, उल्टा घोर विरोधता की। सेवकों ने सताया, कर्मचारियों ने सताया, उनके बच्चों ने सताया, बाहर के विरोधियों ने तड़पाया, उन पर गोलियां चलाई गई। गुरु महारज ने फरमाया है कि घड़ी भर की फांसी उनके दुखों के मुकाबले कुछ नहीं। Miss Mary Carpenter, महात्मा बुद्ध, मेजर टक्कर की मेम का धन्यवाद किया जिनके जीवनों से प्रेरणा ने उनके लक्ष्य की ओर जाने में सहायता की। उनके जीवन ब्रत ग्रहण करने के बाद तो विरोधता ने प्रचण्ड रूप धारण कर लिया। उन्हें शैतान वा राक्षस कहा गया है, पागल, ख़ब्ती, प्रवन्चक, व्यभिचारी, कंजर, कातिल वा हतियारा बताया गया। देव रूप तक रसाई महा कठिन है, इसलिए मनुष्यों ने उन्हें उल्टे रूप में देखा।

विलाप के लेख का पाठ किया, पू० भगवान किस कदर अपने आपको अकेला अनुभव करते थे। धर्मपाल, देव रतन, बेटे बेटियों ने मिलकर उन्हें सताया। नबीना चन्दा सिंह द्वारा मुकदमों का दर्दनाक किस्सा वा आखिर उनकी फतह के विषय में बताया गया।

मनसा सिंह ने आफिस के कागज़ात दुश्मनों को दे दिए, परन्तु गुरू महाराज की ज्योति में पुकार उठे कि "मैं आस्तीन का सांप हूं, अगर फौज में होता तो गोली से उड़ा दिया जाता।"

फिर धन जन की अपील की। सेवकों ने कल्याण में पहुंचने के वायदे किए। देहरादून में सत्संग रखने की रजिन्द्र जी ने प्रार्थना की। एक नौजवान गोपाल जी ने मास शराब दो महीने के लिए छोड़ने की प्रतिज्ञा की। मक्खन सिंह जी ने चार महीनों के लिए मास, शराब छोड़ा, गुरदीप सिंह जी ने 15 दिन के लिए शराब छोड़ी। दान बहुत अच्छी मात्रा में हुआ।

श्रीमान बलदेव सिंह	1,00000
जी के परिवार की ओर से	
उनकी बेटी डा० नम्रता	25,000
सरल गिल सपुत्र इकबाल सिंह	15,000
विशेष दिन के लंगर के लिए	1100

गुप्त दान	10,000
गुप्त दान	20,000
गुप्त दान	1500
अमरजीत बराड़ (पुत्र वधु श्रीमान हरनाम सिंह जी मल्लका)	2000
एस०एन० बाली	3,000
सरोज जिन्दल (पुत्री धर्म रतन जी)	1100
सुभाष अग्रवाल (पुत्र धर्म रतन जी)	1100
श्रीमान जगजीत सिंह जी	1000
बलदेव सिंह जी थराजवाला	1500
तेज राम जी शर्मा	500
(मल्लेका मन्दिर)	1000
सरोज जी कुक्कड़ (पत्नी जगदीष जी)	500
ज्ञान चन्द जी गोनियाना	500
परशोतम जी लांझनी धर्मशाला	500
जसविन्द्र सिंह चहल कैनेडा	500
इकबाल सिंह थराजवाल	500
बलदेव सिंह मल्लेका	500
किरन खेड़ा Centre	500
जसविन्द्र मुल्लर	500
जगीर सिंह केसूपुरा	1000
गुरूदेव राज जी केसूपुरा	500
बलबहादुर सिंह जी	500
कमलेश वशिष्ट	2500

और दान मिलाकर कुल 2,06800/-2 लाख अठासठ हज़ार।

1.30 बजे बच्चों की सभा हुई, जिसका संचालन प्रिंसीपल मिसिज़ सुरजीत बराड़ ने किया। उसके साथ ही संगीत सभा हुई, जिसमें दिव्या शिक्षा गुरूकुल कालिज की कन्याओं ने बहुत सुन्दर भजन गाए और एक सुनील दत्त जी ने बहुत मधुर आवाज में भजन गाया। बच्चों को ईनाम वितरित किए गए। बहुत सुन्दर वातावरण बना।

शाम 4.30 बजे पब्लिक लैक्चर :

वक्ता - डा० विनोद चन्द्र जी खेड़ा

विषय - हमारा सार अस्तित्व आत्मा-विज्ञान की रोशनी में (Human soul in the light of scientific truth)

भजन - "आपके चरणों में हे सत्गुरू सिर हमारा झुकाने के काबिल नहीं।"

सभापति - श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने वक्ता का परिचय करवाते हुए उनके श्रद्धा, सेवा वा बच्चों के लिए समर्पित रूप का बहुत सुन्दर शब्दों में वर्णन किया। उसके बाद विनोद जी ने प्रश्न किया कि आत्मा क्या होती है? आत्मा अमर नहीं है। अन्धेरा क्या होता है? Absence of light. मनुष्य के जीवन की tragedy है कि वह रोशनी से डरता है, अर्थात मनुष्य अपने आपको देखना ही नहीं चाहता। अन्धेरा किसी प्रार्थना से दूर नहीं होता। रोशनी आने से दूर होता है। झूठ के मिटाने के लिए सत्य की अवश्यकता है। बुराई को दूर करने के लिए भलाई की अवश्यकता है।

गलेलियो का 1642 में देहान्त हुआ। उन्होंने खोजा कि पृथ्वी सूर्य के गिर्द घूमती है। सारा ईसाई जगत उनका दुशमन बन गया। उन्हें बहुत उत्पीड़त किया गया। न्यूटन ने नये सिद्धान्त खोजे। आंईसटाईन ने बहुत खोजें की। शरीर के सम्बन्ध में बहुत खोजे हुई, परन्तु अभी भी बहुत अन्धेरा है, अज्ञानता है। दिमागी या मान्सिक ज्ञान और भी कम

है। I.I.T. में भी आत्मा हत्याएं होती हैं। depression आजकल की बिमारी है। हम अपनी गल्तियों को स्वीकार नहीं करते, बल्कि छुपाने में लगे रहते हैं।

उन्होंने आगे बताया कि change is the law of nature, कोई भी अस्तित्व अपरिवर्तनिय नहीं है। फिर आत्मा कैसे परिवर्तन से ऊपर हो सकता है। शरीर, दिमाग और आत्मा सब परिवर्तित हो रहे हैं। आत्मा को परमात्मा का अंश कहा जाता है। परमात्मा को परम पिता कहा जाता है, फिर परमात्मा अपने बच्चों को मरता कैसे देख सकता है, उनके साथ बलात्कार होता कैसे देख सकता है।

विज्ञान सबके लिए एक है। लेकिन जैसे चार अन्धे हाथी को छूकर उसकी अलग अलग परिभाषा देते हैं, वैसे ही धर्म की भिन्न भिन्न परिभाषाएं बताई गई हैं। तरह तरह की परिभाषाओं वा मतभेदों से विज्ञान शुरू होता हैं भिन्न परिभाषाएं कभी सच्ची नहीं हो सकती।

इतने धर्म मतों के होते हमारे देश की यह हालत है कि ईमानदारी की लिस्ट में हमारा देश 137 वें नम्बर पर है। उन्होंने बलबहादुर सिंह जी जगदीष जी कुक्कड़, डा० हरनाम सिंह जी आदि के परिवर्तनों को संक्षेप में बताया उनमें देवात्मा की शक्ति संचार हुई।

हम शक्ति को देख नहीं सकते, क्योंकि शक्ति सूक्ष्म चीज़ है। फिर उन्होंने पू० भगवान ने आत्मा के विषय में जिन 12 प्रश्नों का उत्तर खोजा, जैसे आत्मा क्या है? साधारण मनुष्य की गठन कया है? आत्मा का शरीर से क्या सम्बन्ध है? मनुष्य की परिचालक शक्तियां कौन कौन सी है? आत्मा में परिवर्तन किस प्रकार होता है? परिवर्तन कितने प्रकार का है? उनका परिणाम क्या हैं? नीच गतियां क्या हैं? उच्च गतियां क्या है? उनके फल क्या हैं? मरने के बाद मनुष्य का क्या बनता है? आदि आदि।

मनुष्य के भीतर शरीर सम्बन्धी, अंह सम्बन्धी शक्तियां हैं। जैसे प्रशंसा अनुराग, मान, बड़ाई अनुराग, स्वार्थ अनुराग, मनुष्य में सन्तान अनुराग, मोह अनुराग, धन सम्पति अनुराग, उच्च वा सात्विक अनुराग आदि।

एक शुक्रगुज़ार लड़की की कहानी बताई। संगत के प्रभाव कैसे पड़ते हैं, जैसे एक गला सेब सब सेबों को खराब कर देता है। कई बार कुछ मिन्टों की बुरी संगत इन्सान को बुरा बना देती है।

फिर उन्होंने मरने के उपरान्त मनुष्य कैसे सूक्ष्म शरीर ग्रहण करता है और अपने सूक्ष्म सैलों के अनुसार वह उच्च वा नीच लोकों में जाता हैं। कुछ परलोक सम्बन्धी सच्ची घटनाएं बताई।

उनका सारा ब्यान बहुत ज्ञान भरपूर था। 2 घण्टे के लगभग हाजरीन ने बहुत शान्तिपूर्वक इस लैक्चर को सुना और उसकी सराहना की।

<u>पहली सभा :- 12.12.2011 सुबह 8.30 बजे</u>

सभापति : श्रीमान बलबहादुर जी

विषय :सेवकों का ग्रहण वा प्रतिज्ञा पत्र का पाठ का व्याख्या। इस सभा में प्रतिज्ञा पत्र की एक एक प्रतिज्ञा को बहुत विस्तार से समझाया गया और हाजरीन से भी प्रश्न किए गए और बताया कि हमारी प्रतिज्ञाएं केवल आठ पापों की ही नहीं है, बल्कि प्रतिज्ञा पत्र के चार भाग हैं, पहला भाग गुरू महाराज के सम्बन्ध में विश्वास को लेकर जो मूल

वाक्य है, जिसका एक एक शब्द गहरी सचाई को प्रगट करता है।

दूसरा भाग मोटे मोटे आठ पापों के सम्बन्ध में हैं। तीसरा भाव सत्संग वा सभाओं, महोत्सव, उत्सव में शामिल होने के सम्बन्ध में है।

चौथा भाग, नियत दान के सम्बन्ध में है। नियत दान आज के रु० की कीमत का अदा करना चाहिए।

यह सब प्रतिज्ञाएं बहुत संजीदगी से पूरी होनी चाहिए, तभी हम सच्चे सेवक कहला सकते हैं।

यह सभा सेवकों को अपनी प्रतिज्ञाओं के सम्बन्ध में बहुत सतर्क करने वाली थी।

दूसरी सभा :-

सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी

विषय : भाव प्रकाश

सभापति जी ने बताया कि देव समाज के साथ जुड़ना optional विषय नहीं जैसे जीने के लिए हवा, पानी, खुराक की आवश्यकता है, वैसे ही आत्मा के लिए देव समाज का सम्बन्ध जान और प्राण का सम्बन्ध है। जिनका सम्बन्ध गहरा होता है, उनमें अजब की योग्यताएं पैदा हो जाती हैं। कनल जी सिन्ध प्रान्त के पहले M.A.L.L.B. थे और धर्म बल जी आठवीं पास थे, परन्तु उनकी योग्यताएं इतनी निख़र गई कि कनल जी फरमाया करते थे कि धर्म बल जी सौ कनल पैदा कर सकते हैं, परन्तु कनल एक धर्म बल पैदा नहीं कर सकता।

देव प्रभावों का नाम ही असल में देव समाज है। उसके बाद श्रीमान जी ने संक्षेप में महोत्सव की सारी सभाओं के विषयों को दुहराया और हाजरीन को भाव प्रकाश करने के लिए कहा।

जगजीत सिंह जी लुधियाना : मैं गुनाहगार हूं कि मैंने इस दफा प्रवेश सभा attend नहीं की। यहां बहुत सेवाएं पाई हैं। सभाओं में ध्यान अपनी ओर गया है। अगले साल से कम से कम 1000 रु० दान दिया करूंगा। परिवारिक जनों को सभाओं में लाया करूंगा। कम से कम महोत्सव पर एक नया मैंबर जरूर लाया करूंगा। 1984 में हालात खराब होने पर पिता के पास यू०पी० जाने की सोच रहा था कि कई मिल मालिकों ने मेरी मदद की। कई गाड़ीयां बिना दाम लिए माल की मुझे दे दी मैं उनका शुक्रगुजार हूं। देव समाज की कृपा से industry में मुझ पर बहुत विश्वास करते हैं। घर से कलेश दूर हो गया है। जहां परिवार में मेल है, पड़ोसियों से भी सम्बन्ध सुधर गए हैं। अब अपनी ग़ल्तियां नज़र आने लगी है। परन्तु गुरू कृपा से उन्हें सुधार लेता हूं। नीच गतियां ही दुख का कारण बनती हैं। यह दर वा ग्रन्थ मेरी रक्षा कर रहे हैं। परोपकार के कामों में हिस्सा डालना शुरू हो गया है। जिस गांव में हम रहे हैं, उसका अपने पर ऋण नज़र आया है। उसके स्कूल को दान दिया है।

श्री राजेन्द्र जी देहरादून : तीन दुर्घटनाएं हुई। मेरे बाबा जी (नरेन्द्र दत्त जी धीमान) मुझे बहुत याद आते रहे। (उनके उपकार स्मरण करके फूट फूट कर रोते रहे) धीमान साहिब के मुझ पर बहुत उपकार हैं, उनकी मौत का मुझे बहुत दुख है। बेटे के ऐक्सिडैण्ट में डाक्टर साहिब ने बहुत मदद की। बैंक मैंनेजर ने बड़ी मदद की। मेरे जीजा जी 18 साल बाद मुझे मिले, उन्होंने बैंक गरंटी दी। मैं उनका भी धन्यवादी हूं। धीमान साहिब सुबह शाम कहते थे कि सत्संग वा सभा मत छोड़ना। - - - कौर

से नशे वा मांसाहार छुड़वाया है। लोगों के साथ मेरा व्यवहार बेहतर हो गया है।

श्री ओमप्रकाश जी आर्दश : उन्होंने एक कविता सुनाई जिसका अर्थ था कि मनुष्यात्मा वा देवात्मा का जमीन असमान का अन्तर है।

श्रीमान मधू सूदन जी : बड़ी खुशी है कि महोत्सव पर कुछ सेवा करने की डियूटी मिली। गांव चला गया था, बड़ी मुश्किल से महोत्सव पर पहुंचा हूं। आप श्रीमान जी, बार बार मेरे बारे में पूछते रहे (रोते हुए) यह प्रश्न उठता रहा है कि श्रीमान जी क्यों मेरे बारे में चिन्तित हैं और पूछते हैं। मैं निर्दयी था एक बूढ़ा बैल मरने वाला था, उसे डण्डे मार मार कर उठाता रहा। मां बिमार थी, परन्तु उठकर, नहा धोकर प्रार्थना करती रही कि उसकी जान निकल जाए, तो उसे शान्ति मिले, और कुछ देर में बैल ने प्राण त्याग दिए। मां का उपकारी रुप नज़र आता रहा, मैं स्वयं बिमार होकर उनकी सेवा करता रहा। कल शशी बहन जी वा खेड़ा साहिब को देखकर जीजी बहुत याद आए, उनकी तरफ ध्यान जाता रहा। इस दर पर आकर इन्तहा लाभ हुआ है। यदि इस दर से न जुड़ता तो कभी का ख़त्म हो जाता। मैं दिल से सेवा नहीं करता, जितनी दिल से करनी चाहिए। आगे से दिल से सेवा करने की कोशिश करूंगा। श्रीमान जी की आज्ञा भी दिल से मानने की कोशिश करूंगा।

श्रीमान जी सुभाष जी पंचकूला : मैं आप को धन्यवाद देता हूं कि आप हमें सभाओं वा सत्संगों के लिए बुलाते रहते हो। यहां सभाएं सुनकर मुझे बहुत लाभ हुआ है। आपकी प्रेरणा कारण हम सभाओं में आ जाते हैं। अपने पिता जी का उपकार हमेशा याद करता हूं, जो हमें इस दर के साथ जोड़ गए। जुड़े रहने की नसीहत दे गए। पहले हमारे दादा जी सेवक थे। उन्होंने पिता जी को गुरू से जोड़ा, इसी कारण हम बचे हुए हैं। गुरू की शिक्षा घर में है, इसीलिए घर में मेल और शान्ति है। पूरा वातावरण स्वर्ग जैसा मालूम होता है। मेरा बेटा और उसकी पत्नी बहुत ही अच्छे हैं। उनके ऊपर भी गुरू महाराज की शिक्षा का प्रभाव है। मेरे भीतर भी सत्संग की तड़प रहती है ताकि मेरा कुछ भला हो सके। हमारा परिवार श्रीमान धर्मबल जी, श्रीमान ईश्वर सिंह जी, श्रीमान मेवा सिंह जी, लाला राम जी दास जी, श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी, बख़्शी जी, इन सब की कृपा से बुराईयों से बचा हैं। सबके उपकार नज़र आ रहे हैं। श्रीमान धर्मबल जी का हाथ सिर पर रहा है। गुरू महाराज को बार बार प्रणाम करता हूं। उनकी कृपा से सेहत की भी रक्षा हुई है। आत्मा की सेहित की भी रक्षा हुई है। सबको सुबह याद करता हूं। सब सेवकों के घरों में गुरू महाराज की छवि होनी चाहिए। बच्चों को भी ज़रूर सेवक बनाना चाहिए।

वीरपाल जी समराला : बहुत ही श्रद्धा सम्मान के योग्य श्रीमान जी, बहुत मजबूरी कारण मुझसे कुछ सभाएं Miss हो गई। सरदार जी थे, तो बहुत दिन पहले ही हमें आने का चाव होता था, अब भी चाव से ही सभाओं में आते हैं, पता है कि हमारा भला यहीं है। परन्तु फिर कामों में व्यस्त हो जाते हैं। बहन जी, पिता जी के बारे में बताते थे, सचमुच पिता जी हमारा बहुत ख्याल रखते थे। ऐसा लगता था कि वह हमारे ही पिता हैं। पिता जी के बाद लगता था कि अब हमने समाज में क्या करने जाना है, पर माननिय श्रीमान बलदेव सिंह जी हमारा उतना ही ख़्याल रखते हैं, मैं इनका देन सारी

उमर नहीं दे सकती। क्योंकि इस समाज के कारण ही हमारे घर से मांस, शराब निकला है। बहुत कमियां हैं, जो नज़र नहीं आती, परन्तु यहां आकर कुछ रोशनी मिलती है। कोशिश करूंगी कि अपनी कमियां दूर कर सकूं। मुझे बहुत बार लगता है कि मैं तो अब समाज सेवा में ही लग जाऊं, पर यह सब भी गुरू सदका वा श्रीमान जी सदका ही सम्भव है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी के मुझ पर उपकार हैं। बेटी ने कहा कि अगले वर्ष मुझे इतना बल मिले कि मैं सब सभाएं attend कर सकूं। मेरे साथ मेरी बेटी, मेरी बेटी की friend और उसके father-in-law भी हैं, उन्होंने भी बहुत लाभ उठाया है। ऐसी कृपा होती रहे, इस अमृत वाणी से हम लाभ उठाते रहें।

के०बी० भण्डारी, ऐडवोकेट : मेरा मन बहुत चंचल है। मैं 1956 में सेवक बना, पर मैं सेवक नहीं रह सका। मेरे पास "धर्म जीवन" आता है, पर मैं पढ़ता नहीं हूं। अब पढ़ा करूंगा। वकील होने के नाते झूठ बोलना पड़ता है, अब इससे बचने की कोशिश करूंगा। अपनी कमी नज़र आई है। कृपा फोन द्वारा मुझे सभा सत्संग का पता देते रहें, यह मेरी प्रार्थना है। मन्दिर में जाकर मुझ में तबदीली नहीं आती, यहां तबदीली आती है। यहां जीवन बनता है।

समय बहुत हो चुका था, बहुत से धर्म सम्बन्धी जा चुके थे। सभापति जी ने महोत्सव की सफलता के लिए गहरे भावों से भरकर गुरू महाराज का और सहायकारी शक्तियों का और उच्च लोक वासी उच्च आत्माओं का धन्यवाद किया। धर्मशाला के नेक प्रबन्ध का हृदय गत भावों के साथ धन्यवाद, किया, जिसकी कृपा से 20-22 वर्ष से यहां महोत्सव मना रहे हैं। इस परिवार के भले की कामना करता हूं। हाजरीन वा सभा कराने वालों, भजन गाने वालों का धन्यवाद किया। पंडाल उसारने बनाने और उसकी सजावट से सुन्दर बनाने के लिए जगदीष जी और B.Ed callege डेराबस्सी के बच्चों, लैकचरार ने अनथक संग्राम किया, उनका हार्दिक धन्यवाद किया। खाना बनाने वाले, पानी गर्म करने वालो का भी दिल से धन्यवाद किया। फिर सबने खड़े होकर, जोश से भरकर देव आरती का गान किया और चार बार परम पू०भगवान देवात्मा की जयकार बुलाई। भोजन करके यात्रीगण अपने अपने ठिकानों के लिए विदा हो गए। लोकल पार्टी जगदीष जी की सरपरस्ती में सब समान समेटने और ढोने में व्यस्त हो गए।

(एक सेवक)

कल्याण सत्संग

पाठक गण नोट फरमाएं कि इस साल कल्याण (भटिंडा) में विशेष सत्संग 17 फरवरी शुक्रवार से आरम्भ होकर 20 फरवरी सोमवार दुपहिर तक चलेगा। इस सत्संग में ज़्यादा से ज़्यादा जन शमिल हो कर लाभ उठाएं।

बलदेव सिंह मन्त्री

10 दिसम्बर 2011 को देव समाज के प्रतिष्टित और पुराने सेवक, श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान देव समाज 36 - बी, चण्डीगढ़ के सौ के लगभग वरिष्ट सेवकों के प्रतिनिधि के रूप में एक डैलीगेट के रूप में पधारे और श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान ने स्टेज पर आकर, मन्त्री देव धर्म की आज्ञा लेकर एक हिन्दी में प्रस्ताव भरी सभा में पेश किया, और यह प्रस्ताव सर्वसम्मति के साथ सभा के सब हाज़िर जनों ने खुशी खुशी पास कर दिया: -

एकता प्रस्ताव

देव समाज सैक्टर 36 बी, चण्डीगढ़ के 100 के लगभग वरिष्ठ सेवक - सेविका, जो परम पूजनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्म महोत्सव मनाने के लिए एकत्रित हुए हैं, उन्होंने देव समाज के महा भयानक हालात को देखते हुए उसके सम्बन्ध में एक विशेष प्रस्ताव पास किया है। उन वरिष्ठ सेवकों के प्रतिनिधि के तौर पर हम चंद साथी वहां से आपके लिए यह प्रस्ताव लेकर आये हैं।

जैसा की आप सब जानते हैं की लगभग 23 वर्षों से समाज दो भागों में बंटी हुई है, जिस से देव समाज की अकथनीय हानि हुई है। हमारी माननीय कोंसिल के गलत फैसलों और घोर अन्याय पूर्ण कार्यवाहियों से जो गुरू मिशन की क्षति हुई है, उसकी भरपाई लगभग असंभव है। गुरू मिशन का नीच जीवन मिटाने और उच्च परिवर्तन पैदा करने का मुख्य कार्य बीसियों सालों से पूर्णत: ठप्प पड़ा है लेकिन इन हालातों में विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी (भूतपूर्व सेक्रेटरी देव समाज) ने अपने साथियों सहित प्रचार का अर्थात पापी जीवन बदलने का कार्य किया है और कर रहे हैं जो बहुत सराहनीय है। माननीय श्रीमान जी बहुत तजुरबे कार हैं और तन, मन, धन से मिशन का काम कर रहे हैं। अब हम सब जन यह प्रस्ताव ले कर आये हैं कि वह और उनके साथी भी इस कार्य में हमें सहयोग दें ताकि दोनों पक्ष एकता लाकर गुरू मिशन की हो रही हानि को मिलकर अपनी योग्यता अनुसार कम करने का प्रयास कर सकें। हमें पूरी आशा है कि आप हमारे इस एकता प्रस्ताव को समाज हित में स्वीकार करने की कृपा करेंगे क्योंकि आप सैधांतिक तौर पर इस एकीकरण की सहमति पहले माननिय कौंसल देव समाज को भी दे चुके हैं।

दिनांक 10 - 12 - 2011

स्थान : चण्डीगढ

(धर्म सिंह चौहान और साथी)

शुभ संग्राम

चण्डीगढ़ से श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने यहां पहुंच कर एक सभा की। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने नेचर के अटल नियमों, नेचर की शक्तियों द्वारा आने वाले परिवर्तन के विषय में बताया गया। समयानुसार धर्मों में भी परिवर्तन की अवश्यकता है। नये धर्म के विषय में भी बताया गया। अपने विश्वासों के विषय में सुनने के लिए दिल खुला रखना होगा।

31.10.11 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। उन्होंने बताया कि जीवनी शक्ति की रक्षा और विकास के लिए विकारों और नीच सुखों से बचने से लिए धर्म की अवश्यकता है। मनुष्य सुख लेना चाहता है, परन्तु अनुचित दुखो में फंसता जाता था। सुखों के लिए कातिल तक बन जाता है। परन्तु धर्म की प्राप्ति से अनुचित दुखों से निजात मिलती है। नेक व्यवाहरों से उचित सुख भी प्राप्त हों जाते हैं। धर्म किसी विश्वास से प्राप्त नहीं होता। ईमानदारी, पवित्रता, श्रद्धा, शुक्रगुज़ारी, हमदर्दी का नाम लेकर बताया कि इन भावों के बिना धर्म नहीं आ सकता। गुरू महाराज ने पाप सम्बन्धी जो प्रतिज्ञाएं रखी हैं, उनसे बहुत सी हानि से मनुष्य बच जाता। श्रीमान मनोहर लाल जी की ईमानदारी की घटनाएं बताई गई। सभा प्रभावदायक रही।

31.10.2011 शाम 8.30 :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया सब धर्मों के विश्वास भिन्न हैं, परन्तु सब अपने विश्वासों को सत्य समझते हैं। विश्वासों को पररखने की विधि है, वह है विज्ञान मूलक विधि। वैज्ञानिक विधि ने सच्चे ज्ञान के दरवाज़े खोल दिए हैं। इसके चार अंग है:- (1) घटनाएं (2) निरीक्षण (3) घटनाओं के कारणों का अनुमान वा परिकल्पना- (4) क्या यह नतीजे घटनाओं पर पूरे उतरते हैं। परम पू० भगवान ने अपनी शिक्षा इसी विधि के अनुसार दी है। ध र्म का ज़रूरी अंग उपास्य देव होता है। पू० भगवान सचाई भलाई के अनुरागी वा झूठ बुराई के शत्रु हैं। इसलिए उनकी उपासना से सत्य धर्म का ज्ञान मिल सकता है। इस विषय को बहुत सुन्दर ढंग से समझाया।

1.11.2011, 8.30 बजे सुबह :- इस सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि ईश्वर का नाम जपना, सिमरन करना, पाठ करना धर्म नहीं होता। धर्म का परिचय मनुष्य के व्यवहाररों से होता है। उच्च भावों से प्रेरित व्यवहार उच्च भाव होते हैं। उच्च भावों से व्यवहारों को ज़िकर किया और बताया कि पदमपुर में ही एक परोपकारी रहते हैं, परन्तु श्रद्धा वहीन जनों को नज़र नहीं आते। महान व्यक्तियों के आगे झुकना, उनकी मुक्त कण्ठ से महिमा गाना, उनको प्रणाम करना, उनके परोपकार में योग दान देना ही उनको देखना है। सभापति जी ने बताया कि जैसे सूखे कपड़े पर रंग नहीं चढ़ सकता, सूखे आटे की रोटी नहीं बन सकती उसी प्रकार श्रद्धा से नम्र वा सरस हुए बिना धर्म प्राप्त नहीं हो सकता। सभापति जी ने श्रद्धा भाव की अवश्यकता को हृदयों पर अंकित किया।

1.11.2011, 8.30 बते रात :- इस सभा में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि धर्म सम्बन्धों में है। देव धर्म सम्बन्ध तत्व की शिक्षा देता है। हमारे पुराने धर्म ईश्वर प्राप्ति को धर्म समझते हैं, सम्बन्धों को माया समझते हैं। पू० भगवान ने यह शिक्षा दी है कि सम्बन्ध माया नहीं, हम चारों जगतों के सम्बन्धों से बन्धे हुए है। जिन भावों से हम व्यवहार करते हैं, वह हमारे धार्मिक होने को निरधारित करते हैं। माता पिता के द्वारा हमारा जन्म हुआ है। समाज का विकास वा नैतिक वा अनैतिक होना सम्बन्धों पर निर्भर है। गुरू महाराज अपने प्रभावों द्वारा सम्बन्धों में व्यवहारों को बदलते हैं। इस परिवर्तन की बहुत सी घटनाएं

Published on 5th of the month
20
जनवरी - 2012
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

बताई, जिससे मण्डल प्रभावदायक बन गया।

2.11.2011, सुबह 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि हर व्यक्ति बहुत बेबस, बेकस वा असहाय है। हम आंखों से तो सारा संसार देखते हैं, परन्तु अपना आप नज़र नहीं आता। दूसरों के गुणों को देखने में भी हम अन्धकार में हैं। सभापति जी ने एक दक्षिण भारती की महानता बताई जिसने 6 बच्चों की मां को इतनी दूर से आकर अपना गुर्दा देकर बचा लिया। भक्त पूर्ण सिंह की महिमा बताई। एक उपकारी अध्यापक की ईमानदारी का गुण बताया। एक हक़ीम के परोपकारी रूप का हृदय स्पर्षिय ढंग से वर्णन किया। गोबिन्द वल्भ भाई पटेल की अपने सफाई कर्मचारियों के प्रति सत्कार भावना को वर्णन किया। सरदार पटेल, गांधी जी, पंडित नहरू के आगे झुकते थे। गुरूबख़्श सिंह प्रीतलड़ी के सम्पादक थे उनके प्रशंसा करने की खूबी ने पंजाबी वार्ता का बेताज बादशाह बना दिया था। इस सभा ने यह महसूस करवा दिया कि "सकल पदार्थ हैं जग मांही, श्रद्धावहीन नर पावत नहीं"।

2.11.2011, शाम 8.30 बजे :- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने "धर्म संगत और उसके प्रभाव" के विषय पर करवाई। विश्व में सब अस्तित्व प्रभाव ग्रहण करते हैं और प्रभाव छोड़ते है और दूसरों को बदलने की समर्थ्य रखते हैं। परम पू० भगवान ने जो देव प्रभाव दायक संगत पैदा की है, वह उसमें आत्मा परिवर्तित होते हैं। नाशुकरे बच्चों के माता पिता चरणों में झुकाकर उन्हें शुकरगुज़ार बनाते हैं। पंडित नेतराम जी, मदन मोहन लाल जी डा० सिरी राम जी के परिवर्तन सुनाए, जिससे मण्डल बहुत प्रभावदायक बन गया।

3.11.2011, सुबह 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि हमारा आत्मिक अन्धकार कुछ दूर हो तो कई नये पक्ष नज़र आ जाता हैं। हम पर उपकारों की वर्षा हुई है, पर दुखांत यह है, स्वार्थी मनुष्य से यह पक्ष छुपा रहता है। मिस्तरी अंग्रेज सिंह को अपने उपकारी इसी संगत में नज़र आए। एक अमरीकन राष्टपति की शुक्रगुज़ारी की कहानी का सुन्दर रूप से वर्णन किया। जिस उपकारी ने पढ़ाई में सहायता की थी, सारी उमर हर साल उन्हें पांच डालर की रकम भेजते रहे। वह सारी उमर इस उपकार को कर्ज़े की तरह अनुभव करते रहे। डाक्टरों वा अध्यापिकों का कर्ज़ा हम कभी उतार नहीं सकते। शुक्रगुजारी के भाव के बिन धर्म का कोई अर्थ नहीं। यह सभा बहुत प्रभावदायक थी।

(चलता)

पाठकों को नये वर्ष की बहुत बहुत बधाई

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts

महोत्सव 2011

माननीय देव समाज कौंसल ने वर्ष 2011 का पावन महोत्सव देव समाज महिला महाविद्यालय फिरोज़पुर में मनाने का कार्यक्रम रखा था, जिसकी कार्यप्रणली 9 दिसम्बर से 12 दिसम्बर तक रखी गयी थी। इस प्रकार स्थिर प्रणाली के अनुसार परम पूजनीय भगवान देवात्मा संस्थापक देव समाज ने उनका पावन जन्म महोत्सव एक अथवा कई स्थानों पर मनाए जाने का आदेश पूजनीय देवशास्त्र चौथे खण्ड में दिया है। फिरोज़पुर देश के एक कोने में स्थित है, जहां पर अनेकों कारणों से हरेक धर्मसम्बन्धी, वा सेवक के लिए पहुंचना सम्भव नहीं है। हमारी माननीय कौंसल के चिरकाल से अपने सेवकों से चले आ रहे वैचारिक व सैद्धांतिक मत भेदों के कारण देव समाज के दो घटक पहले से ही अलग तरीके से मिशन का कार्य चलाने के लिए बाध्य हैं। इस साल महोत्सव मुम्बई, श्री अकबरपुर, रूड़की, चण्डीगढ़ व फिरोज़पुर में मनाया गया।

पिछले कुछ महीनों से माननीय देव समाज कौंसल ने अपने दर्जनों कर्मठ, उत्साही व निस्वार्थ भाव से काम करने वाले ऐसे प्रबुद्ध कर्मचारियों, प्रचारकों व सेवकों के प्रति कि जिन्होंने प्रतिनिधि सभा में (जो कि बहस करने व विचार व्यक्त करने का सदन है) कौंसल की गलत नीतियों व निर्णयों का विरोध किया, उनके प्रति सख्त से सख्त रवैया अपनाते हुए उन्हें बाहर का रास्ता दिखाने के अतिरिक्त श्रेणियों में अवनत कर दिया तथा कईयों को कारण बताओ नोटिस आदि जारी कर डराया धमकाया जा रहा है। समाज के जो भी सेवक ऐसे सेवकों के प्रति सहानुभूति रखते हैं, उन्हें भी उत्पीड़न व उन्मूलन के निशाने पर रखा हुआ है। अपनी इस प्रकार की तानाशाही, निरंकुशता व स्वेच्छाचारिता वश माननीय कौंसल को केवल अपना Supreme Body होने के अधिकार के अलावा सेवकों का कोई रूप नज़र नहीं आता।

सेवकों के प्रति नीच घृणा का इस हद तक खुला प्रकाश है कि उन्हें देव समाज समाचार में समाज के शत्रुओं की संज्ञा दे डाली। इस प्रकार दु:खी, उत्पीड़ित व हतोत्साहित सेवक दल को न्यायिक शरण तक लेनी पड़ी है।

फिरोज़पुर महोत्सव के निमन्त्रण कार्ड भी हमारी माननीय कौंसल ने ऐसे उपरोक्त सेवकों व उनके साथ सहानुभूति रखने वालों को अपनी घृणा वश नहीं भेजे। दूसरी ओर सेवक अपनी अपनी प्रतिज्ञा वश महोत्सव मनाने के लिए बाध्य हैं। ऐसे में सेवकों के इस समूह ने माननीय कौंसल से चण्डीगढ़ देव समाज भवन अथवा इसके प्रांगण में उन्हें पावन महोत्सव मनाने की इजाज़त चाही, जो नहीं दी गयी। यही नहीं भारी पुलिस बल वा भाड़े के बाहूबली देव समाज भवन सैक्टर-36-बी पर तैनात करवा दिए गए ताकि वहां कोई दाखिल न हो सके। गुरू महाराज के बाद अद्वितीय समाज का संचालन करने वाली कौंसल का कैसा अद्वितीय दृष्टांत।

परन्तु उत्साही सेवक समूह के धैर्य, दृढ संकल्प व उत्साह की दाद देनी पड़ेगी कि सब

प्रकार की विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए, उन्होंने अल्पकाल में ही सैक्टर 24 चण्डीगढ़ की एक धर्मशाला बुक करवा कर इसमें आवश्यक साज सज्जा कराते हुए पावन महोत्सव का विधिवत आयोजन किया। यात्रियों के ठहरने के लिए इस धर्मशाला के सभी कमरों के ईलावा किसान भवन सैक्टर 35 में भी पर्याप्त स्थान किराए पर लिया गया और भोजन की उत्तम व्यवस्था की गई। एक प्रकार से सभी सुविधाओं वा साधनों की अवर्तमानता होते हुए भी किसी प्रकार की निराशा का सामना नहीं करना पड़ा बल्कि आशाओं से कहीं बढ़ कर सफलता प्राप्त हुई। प्रवेश सभा में ही 40 से ऊपर संख्या थी जो महोत्सव के विशेष दिन तक 90 तक पहुंच गई थी। विशेष बात यह थी कि इस पावन अवसर सब हाज़रीन सेवक थे न कि किसी संस्था के कर्मचारी वा विद्यार्थी। इस पावन अवसर पर चण्डीगढ़ मोहाली, पंचकूला, नारायणगढ़, अम्बाला शहर, अम्बाला छावनी, हिसार, मल्लेका, सोलन, गोनियाना, जीरकपुर, पटियाला, संगरूर, चित्तौडगढ़, बरनाला, लुधियाना व लखनऊ से सेवक-सेविका शामिल हुए। विशेष बात यह रही की श्रीमान रूपचन्द जी के परिवार से उनके पुत्र-पुत्र वधुएं, पौत्र - पौत्रियां, पुत्रियां, दामाद, दोहतियां आदि प्राय 25 की संख्या में जन उपस्थित रहे और स्वयं को बहुत धन्य-धन्य कहते नहीं थकते रहे। पूरे महोत्सव का माहौल तीनों दिन बहुत शांतमय रहा। सभी Participants गुरू महाराज के प्रति श्रद्धा का प्रकाश करते रहे। प्रवेश सभा से लेकर भाव प्रकाश तक सभी सभाएं अत्यंत प्रभावशाली एवं नवीनता लिए हुई थी, जिनसे श्रोतागण बहुत लाभान्वित हुए। सभाओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार से है।

भजनों का गान श्रीमान चन्द्रगुप्त जी व श्रीमति बलविन्द्र कौर जी ने किया।

प्रवेश सभा :- **(श्रीमान चन्दगुप्त जी) 9.12.2011 सायं 5.00 बजे** :- देव स्तोत्र के गान एवं व्याख्यान के उपरान्त सभापति जी ने ब्यान किया कि सात अरब की आबादी में से हम चन्द आत्माओं को नेचर की सहायकारी शक्तियां इस पावन अवसर पर लाई हैं। महोत्सव कोई रस्म नहीं है बल्कि इस माध्यम से हम देवात्मा के साथ अपना सम्बन्ध गाढ़ करने के लिए आए हैं। हर काम का पहला कदम अथवा शुभारम्भ होता है, इसी प्रकार प्रवेश सभा इस पावन महोत्सव का पहला कदम है, इसके द्वारा हम अपने हृदय की भूमि को आने वाले दो तीन दिनों के लिए देव प्रभावों की प्राप्ति के अनुकूल बना पाते हैं इसलिए इसका बड़ा महात्व है।

शरीर की मूलभूत आवश्यकताएं रोटी, कपड़ा और मकान हैं, बाकी जो इच्छाएं हैं वो कभी पूरी नहीं होतीं। खाना पीना और मौज उड़ाना नहीं बल्कि आत्म ज्ञान जिसके प्रति इन्सान बेखबर है प्राप्त करना सत्यज्ञान है, यह उच्य लक्ष्य है जिसके प्रति आस्थावान होना आवश्यक है। देवात्मा की शिक्षा उनका साक्षात जीवन है। भगवान ने कथनी व करनी में भेद नहीं रखा। उन्होंने सत्य शिव सुन्दर का जो लक्ष्य निर्धारित किया है, उसमें सत्य वैज्ञानिकों का क्षेत्र है, शिव सात्विक जीवन धारियों का एवं सुन्दर कलाकारों का क्षेत्र है। इस परम लक्ष्य

को लेकर भगवान ने अपने दर्शन में धर्म और विज्ञान का मेल कराया है। पूर्ण सात्विकता के बगैर धर्म प्राप्ति की कल्पना भी नहीं हो सकती।

10.12.2011, पहली सभा, 9.00 बजे प्रात : - सभापति श्रीमान M.L. Gupta ji।

अनुकूल परिस्थितियों के अनन्तर ही विकास क्रम में जीवन आया है, इसलिए यह विशेष है। इसे हर हालत में बचाने की नितान्त आवश्यकता है। इस सच्चाई को केवल मनुष्य ही समझ सकता है। किसी घटना की सच्चाई जानने के लिए विज्ञान का आधार ही कारगर है। मानसिक, शारीरिक व आत्मिक गठन विरासत की देन है और वातावरण इन्हें प्रभावित करता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने विज्ञान को धर्म का आधार मानते हुए जीवन के सत्यों से अवगत कराया है। सब प्रकार की मिथ्याओं को आधारहीन बता कर सच्चे धर्म की स्थापना कर एक सार्वभौमिक दर्शन दिया है जो अपने आप में अद्वितीय है।

10.12.2011 (सायं 4.30 बजे) सभापति श्रीमान राधेश्याम जी शर्मा :-

विश्व में सब कार्य शक्तियों के द्वारा हो रहा है। हमारे जीवनों में जो कुछ भी शुभ का कार्य हो रहा है अथवा सम्भव है वह देवात्मा की देव शक्तियों से ही सम्भव है। काश हम उनके देव प्रभावों को ग्रहण करने के योग्य हो सकें। परम पूजनीय भगवान के दर्शन में चार का आंकड़ा बहुत महत्व रखता है यथा उनमें चार प्रकार की निराली शक्तियां, चार जगत, चार बार जय ध्वनि, चार देव शास्त्र, चार अनुरागी शिष्य। विजय पताका में चार रंग। चार पूजनीय स्थान श्री अकबरपुर रूड़की,लाहौर व सोलन तथा चार ही उप स्थान - अम्बाला, बठिंडा, फिरोज़पुर और मोगा। चार 'स' अर्थात, साधन, सेवा, सत्संग व सदभाव। इसी प्रकार देव रूप प्राप्ति के लिए चार चीज़ों की आवश्यकता - अटल विश्वास, श्रद्धा कृतज्ञता व आकर्षण। नीच जीवन को बढ़ाने वाले भी चारभाव हैं - वे हैं घमण्ड, स्वार्थ, घृणा व स्वेच्छाचरिता। उन्होंने भक्त पूर्णसिंह व मदर टैरेसा के सेवा भाव का ज़िक्र करते हुए बताया कि सेवा उच्च भावों से हो। लाभ उससे ही होता है। इन्सान सेवा इसलिए नहीं करना चाहता क्योंकि इसमें उसे सीधा लाभ नज़र वहीं आता। सेवा का लाभ केवल देवात्मा की रोशनी में नज़र आता है।

11.12.2011, महोत्सव का विशेष दिन : प्रातः 6.30 बजे:- इस समय उपस्थित सभी धर्म सम्बन्धियों ने एक दूसरे को पावन महोत्सव की बधाइयां दी। कीर्तन किया गया जिसमें भगवान की महिमा विषयक कई भजनों का सामूहिक गान किया गया। प्रातः7 - 10 की वेला पर भगवान के जन्म समय पर चार बार जय ध्वनि के नारे लगाए गए और प्रगटे देव गुरू भगवान का गीत गाने के बाद सभी ने पुष्पार्चन से भगवान का जन्मोत्सव हर्षोल्लास से मनाया व भगवान की महिमा का वर्णन किया गया।

इस समय की सभा श्री मान डी॰ एस॰ चौहान जी ने करायी जिसमें भगवान देवात्मा के अद्वितीय रूप व अद्वितीय शिक्षा की महिमा का वर्णन किया गया। उन्होंने बताया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा ही ऐसे निराले व

अद्वितीय वजूद इस धरती पर अवतरित हुए हैं जिन्होंने धर्म और विज्ञान को एक सूत्र में डाल कर कुल विश्व से मिथ्या मतों, भ्रमों व उनके महाभयानक फलों से निकाल कर बहुत बड़ा उपकार किया है। आत्मा का सत्यज्ञान देकर एवं सम्बन्ध तत्त्व की व्यवहारिक शिक्षा देकर इसी धरती पर स्वर्ग स्थापित करने का दावा किया है। देवात्मा ने जो शिक्षा दी है उसे अपने जीवन में अक्षरश: धारण किया है।

11.12.2011 - सायं 4.00 बजे: -

दूसरी सभा : पब्लिक लैक्चर

वक्ता : डा० शशीजैन

विषय : **आधुनिक युग में देवधर्म का महत्त्व।**

जैसा कि हम जानते हैं कि आज का युग विज्ञान का युग है अर्थात उसी बात पर विश्वास किया जाता है, जो वैज्ञानिक विधि द्वारा प्रमाणित हो जाए। देखा जाए तो हर बात के सकारात्मक व नकारात्मक दो पहलू होते हैं। सकारात्मक दृष्टिकोण से विज्ञान के कारण ही सारा विकास हुआ है। पिछले 100 सालों में जो विकास हुआ है, उतना 1000 साल में भी नहीं हुआ। आज गृहिणी का जीवन कितना आसान हो गया है। कृषि का कार्य जो सबसे कठिन माना जाता था वह बहुत सुलभ हो गया है। श्वेत क्रान्ति व हरित क्रान्ति द्वारा उपज कई गुना बढ़ गई है। गुणवत्ता में भी वृद्धि हुई है। आधुनिक टैक्नोलोजी द्वारा आशाओं व कल्पनाओं से भी परे परिणाम मिल रहे हैं। वीडियो कनफ्रेंसिंग, अंग प्रत्यारोपण जैसी सुविधाओं ने जीवन ही बदल दिये हैं। 152 मंजिला भवन बना कर इंजिनियरिंग के कमाल हो गए हैं। शिक्षा का स्वरूप बदल गया है। धर्म की दुनिया में वही ध र्म मान्य हो सकता है जो प्रकृति के नियमों पर आधारित हो व विज्ञान के साथ जिसका सांमजस्य हो और यह देवधर्म ही हो सकता है। धार्मिक गुरू आम तौर पर रूढ़िवादी होते हैं। देवात्मा ने अपने शिष्यों को नवीनताओं को स्वीकार करने की आज्ञा दी है - इससे बड़ी वैज्ञानिक अवधारणा क्या हो सकती है। उन्होंने आत्मा के विषय में भी स्पष्ट किया कि इसके बनने व बिगड़ने में भी वैज्ञानिक नियम लागू होते हैं।

जब हम नकारात्मक पहलुओं की ओर दृष्टिपात करते हैं तो सबसे पहले जो बात सामने आती है, वह है नैतिक मूल्यों का पतन - आज जो लूटपाट, फिरौती, भ्रष्टाचार, दुराचार व Easy money आदि के किस्सों की भरमार है, उन्हे देख सुनकर रोंगटे खड़े होते हैं। वातावरण दूषित करने के लिए मनुष्य ज़िम्मेवार है चाहे वह वायु प्रदूषण हो, जल प्रदुषण हो, ध्वनि प्रदूषण हो, ग्लोबल वार्मिंग की समस्या हो, Ozone layer व Ecological imbalance की बात है अथवा हिंसा है। यह सब कुछ मनुष्य के सुख अनुरागों की तृप्ति के कारण ही है। दुनिया में आतंकवाद के जगह - जगह हमले, जेहादी हमले, प्रोपर्टी को लेकर झगड़े, हत्याएं, दहेज, अपराध, भ्रूण हत्याएं आदि जो भी जुल्म हो रहे हैं, वह सब मनुष्य के एक वा दूसरे नीच सुख अनुराग की तृप्ति के कारण हैं। धार्मिक हिंसा, ईसाई हिन्दू व मुस्लिम सब समुदायों में पनप रही है। पशुओं के प्रति हिंसा का तो किसी को दर्द ही नहीं है। Thanks giving Day पर टरकी नामक

पक्षी को मारकर खाया जाता है - उसे टरकी डे, के नाम से भी मनाया जाता है। ईद पर भेड़ बकरियों का बेरहमी से कत्ल किया जाता है। मन्दिरों में पशुओं की बलि से खून की धारा बहाई जाती है। नशों का सेवन फैशन बन गया है।

इन सब चुनौतियों को देव धर्म ने स्वीकार करते हुए दुनिया को एक सार्वभौमिक धर्म प्रदान कर मनुष्य की प्रकृति में परिवर्तन पैदा कर सब समस्याओं को समाप्त करने का दावा किया है। यदि केवल इसकी पहली श्रेणी की प्रतिज्ञाएं ही पालन की जाएं तो यह सब समस्याएं एक झटके में ही दूर हो जाती है। मोक्ष की धारणा का देव धर्म में अर्थ हैं नीच जीवन से मोक्ष। सम्बन्धों को त्योहारों के रूप में मनाया जाता है। भगवान देवात्मा का विभिन्न क्षेत्रों में जीवन रोल माडल है। हमें देवात्मा की देव समाज के लिए एक सजग प्रहरी का काम करना चाहिए।

1) **<u>अंतिम सभा भाव प्रकाश की सभा :</u>** -

सभापति : श्रीमान मेहर सिंह जी

किस किस को धन्यवाद दूं। जो खुशी व आनन्द इस महोत्सव पर मिला वह कभी नहीं मिला यह सब कुछ गुरू महाराज की अपार कृपा से सम्भव हुआ। श्री मान चन्द्रगुप्त जी की प्रवेश सभा से बहुत लाभ हुआ। श्रीमान राधेश्याम जी का जीवन बहुत तपस्वी है, हम सब को पता है जो स्वयं में प्रचार है। आज के पब्लिक लैक्चर में डा० शशी जैन जी ने बताया कि इन्सानी समस्याओं का हल भगवान देवात्मा के पास है। इस महोत्सव की सफलता के लिए श्रीमान दर्शन सिंह जी व डा० सतिन्द्र ढिल्लों जी विशेष रूप से धन्यवाद के पात्र हैं।

2) **<u>श्रीमान विजय कुमार जी (लखनऊ)</u>** :- हम 15 - 20 साल से देव समाज से दूर थे। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की विशेष कृपा हम पर हुई कि परिवार को पुन: एक दिशा मिल गई। पूज्यवर पिता जी (श्रीमान रूप चन्द जी) की मेहनत व प्रेरणा से परिवार बचा हुआ है वा गुरू के चरणों से जुड़ा होने के कारण बरकतों से मालामाल है। इस महोत्सव पर सारा परिवार शामिल हो कर अपने आप को सौभाग्यवान समझ रहा है। काश हमारी तुच्छ सी शक्तियां गुरू मिशन में कुछ काम आ सकें। ध र्म सम्बन्धियों व नेचर की सहायकारी शक्तियों अथवा देवात्मा का परम आशीर्वाद हम पर बना रहे।

3) श्रीमान एम०एल० गुप्ता जी: - इस महोत्सव पर नई चेतना जाग्रत हुई है। देव समाज में आए CRISIS के कारणों को जानकर हर किसी को दुख है लेकिन किसी सद्भावना के पैदा होने की अपेक्षा प्रभावित सेवकों को शत्रु बताना नीच घृणा के प्रकाश से बढ़कर कुछ नहीं जो बड़ों से बिल्कुल अपेक्षित नहीं है। देव समाज से सेवकों को निकाल देने की रिवायत निन्दनीय है ओर घृणित कार्रवाई है। मेरा प्रयास रहेगा कि समाज में पूर्ण रूप से मेल हो जिसके लिए सब को जिम्मेवारी से काम करने की जरूरत है। छोटे बड़े सब गल्ती करते हैं - बड़ों की बड़ी जिम्मेवारी होती है।

4) **<u>श्रीमान हरपाल सिंह जी पुण्डीर :</u>** - पिछले कुछ समय से संतुलन बिगड़ा रहा है

जिसे ठीक करने के लिए साधन बढ़ाए। डा० शशी जैन जी के लैक्चर से बहुत उभार मिला है। गुरूमहाराज का मिशन सब के लिए है। घंमड और घृणा की लहरों से समाज की रक्षा हो ऐसी मेरी कामना है। पतन की भी सीमा होती है। काश! सहायकारी शक्तियां विकास की ओर प्रेरित कर सकें व बेहतरी आ सके।

5) **श्रीमान बैनी प्रसाद जी :**- यहां की सभाओं से बड़ा सकून मिला है। यहां के इन्तजाम को देख कर विश्वास नहीं हो रहा था कि इतने सीमित साधनों और कार्य कर्ताओं की कमी होते हुए ऐसी सुन्दर व्यवस्था कैसे हो गयी। श्री मान मेहर सिंह जी व श्रीमान दर्शन सिंह जी की मेहनत से सारा प्रबन्ध इतना आलीशान हुआ, उनका धन्यवाद करता हूं। हालातों से जूझने का बल मिला है। आयोजकों के प्रति सम्मान बढ़ा है।

6) **श्रीमान जसविन्द सिंह जी :**- 15 साल से समाज में आता रहा हूं। सभाओं में बहुत आनन्द आया। मैं किसी व्यक्ति से नहीं जुड़ा। सदा गुरू मिशन व पाई गई बरकतों का ही ख्याल करता रहता हूं। पूरे महोत्सव में दिली मुस्कान भरी रही। यहां खाने पीने व ठहरने का सराहनीय इन्तजाम देख कर धन्यवाद का प्रकाश करता हूं।

7) **श्रीमान धर्मपाल जी :**- गुरू महाराज की शिक्षा इतनी लासानी है कि श्रीमान शब्द से ही बहुत लाभ हो जाता है। मुझे यह आभास हुआ है कि अपना आचरण ठीक रहेगा तो सब कुछ उपलब्ध हो जाएगा। फिर अधिक से अधिक सम्पर्क रखने व सभा - साधन करने से क्या - क्या बरकतें मिल सकती है, उनका तो साक्षात अनुभव ही बताएगा, वर्णन की बात नहीं। गुरू महाराज से ज्यादा से ज्यादा जुड़े रहने की आकांक्षा है - इसके लिए और बल मिले।

8) **श्रीमान राधेश्याम जी :**- यहा से प्राप्त लाभ वर्णन नहीं किये जा सकते। पिछले 26 साल से सेवक बनने के बाद महोत्सव नहीं छोड़ा था। इस साल चिन्ता थी कि अबकी बार कैसे होगा - नागा हो गया तो अनर्थ हो जाएगा। परन्तु गुरू महाराज की कृपा से यह तो ऐतिहासिक महोत्सव हो गया। यहां की सभाएं सेवाएं व व्यवस्था देख कर गुरू महाराज को धन्यवाद देते नहीं थकता। इसके अलावा यहां के आयोजकों की जितनी सराहना की जाए, थोड़ी है। हमें किसी से घृणा नहीं तरस खाने की आवश्यकता है।

9) **डा० सतिन्द ढिल्लों जी :**- दो सभाओं से अस्वथ्य होने के कारण वंचित होना पड़ा उसका बड़ा अफसोस है। श्रीमान चन्द्रगुप्त जी की सभा व उन द्वारा गया गया भजन "वर्षा मेरे हृदय पर अमृत तेरे की होवे" ने बहुत प्रभावित किया। मेरे दिल में बहुत कुछ करने की प्रेरणा है। माता - पिता जी देव समाज में न आते तो न जाने क्या हालत होती। पिता जी की चाहत थी कि मेरे बच्चे समाज के लिए कुछ कर सकें। काश! मैं उनकी इच्छा को किसी हद तक पूर्ति कर सकूं। श्रीमान चौहान जी, दर्शन सिंह जी, चन्द्रगुप्त जी व मेहर सिंह जी का इस प्रबन्ध के लिए व सहयोग के लिए आभार प्रकट करती हूं। श्रीमान राधेश्याम जी के बारे इतना कुछ जानकर बहुत प्रसन्नता हुई। उनके सेवाकारी रूप में और

वृद्धि की कामना करती हूं। मेरा किसी से व्यक्तिगत विरोध नहीं है और न ही किसी के प्रति कोई दुष्भावना है। मैं समाज हित में ज़्यादा योगदान देने की कोशिश करूंगी।

10) **<u>श्रीमति बलविन्द कौर जी :</u>** - इस महोत्सव से पहले मन में आशंका थी। मैं तीन साल से ही देवात्मा की शिक्षा को जान पाई हूं। पिछले दिनों जब से देव समाज में समस्या आई तो मैं भटक गई थी और काफी निराश हो गयी थी और अपने धर्म पति से भी उलझने लगी थी। मैडम सतिन्द्र ढिल्लों जी ने उत्साह बढ़ाया। इस महोत्सव की सफलता से पुन: खुशी लौटी है और आगे बढ़ने की उम्मीद की जा सकती है। धर्म सम्बन्धियों का तह दिल से शुक्रिया करती हूं। कि मेरा आत्म बल बढ़ा है।

देवआरती के गान के बाद चार बार जयध्वनि द्वारा इस महोत्सव समारोह का समापन हुआ।

नोट

इस महोत्सव की एक विशेषता यह रही कि इस पावन अवसर पर एकत्रित सेवकों ने माननीय कौंसल के समय-समय पर गलत फैंसलों के कारण चिरकाल से दो भागों में बंटी समाज को एकता सूत्र में बांधने संबंधी 10-12-2011 के एक विशेष प्रस्ताव पास किया।

माननीय कौंसल की तानाशाही व सेवकों की समाज से निकाल बाहर करने की दमनकारी नीतियों के कारण समाज का पहला विघटन प्राय: 23 वर्ष पहले हुआ था और उसका यह सेवकों के प्रति उन्मूलन व उत्पीड़न का रवैया अभी भी जारी है। कौंसल की इस प्रकार की अन्याय पूर्ण कार्यवाहियों के कारण गुरू मिशन की क्षति की पूर्ति नहीं हो सकती। गुरू मिशन का नीच जीवन से मोक्ष और उच्च जीवन में विकास का कार्य लगभग बन्द हो चुका है। ऐसी परिस्थितियों में 23 वर्ष पहले समाज से अलग किये जाने पर माननिय श्रीमान बलदेव सिंह जी मिशन का कार्य बहुत सराहनीय ढंग से कर रहे हैं, इस सन्दर्भ में उन द्वारा अनेकों आत्माओं को नीच जीवन से निकाल कर परिवर्तित करने के अनेकों उदाहरण मौजूद हैं। माननीय श्रीमान जी के इस समर्पण भाव से व तन मन धन से मिशन का कार्य करते रहने से प्रेरित हो कर इस सेवक दल ने यह आवश्यकता अनुभव की है कि दोनों पक्ष एकता सूत्र में बंध कर गुरू मिशन की सच्ची सेवा मिलकर करने का प्रयास करें। माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस प्रस्ताव को समाज हित में स्वीकार कर लिया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि वे समाज में प्रचार कार्य के लिए ही विशेषकर इच्छुक रहेंगे।

ज्ञात रहे कि वर्ष 2010 में माननीय कौंसल ने इन्हें देव समाज मुख्यधारा में पुन: शामिल करने का निर्णय ले लिया था-जो न जाने शीघ्र ही क्यों किसी स्वार्थवश बदल दिया गया।

डी० एस० चौहान